सह-अस्तित्व : एक वैचारिकी

स्नेह भेंट - डॉ० संगीता मौर्या
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी
26.03.19

विकास सिंह
संपादक
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गाजीपुर

लोकनाथ पब्लिकेशन

प्रथम संस्करण : २०१९

ISBN 978-93-81123-92-8

© प्रकाशक

Email- prcbsbi@gmail.com

lnpvns@gmail.com

Web : www.philosophical researchcouncil.com

मुद्रक

फिलोसोफिकल रिसर्च कौंसिल

प्रकाशक

लोकनाथ पब्लिकेशन

लखनपुर भुल्लनपुर

वाराणसी २२११०८

प्रथम पुष्प

मेरे साथ तुम भी चला करो....

सविता भारद्वाज ♦

सृष्टि के कण-कण में सह-अस्तित्व का बोध दिखता है। यह सहकार और सह-जीवन ब्रह्माण्डव्यापी है। यहाँ सूर्य-चन्द्र, नक्षत्र-तारावलियाँ, नदी-वारिधि, आकाश का वितान धरती की छांव है। धरती की कोख में बीज है जिसका अंकुर फूट कर विशाल वृक्ष बनता है। वन-उपवन की सुषमा सृजित होती है। वन-अरण्यों का अपना सह-जीवन है, साथ है। वृक्षों की कोटरों, शाखाओं पर शुक-सारिकादि अपना नीड़ बुनते हैं।

दाम्पत्य-जीवन का सुखद सह निवास होता है। वंश-वृद्धि होती है। उनके पोषण की व्यवस्था होती है। दूर से दाने चुगकर उसे चोंच में भरकर अपने नीड़ की तरफ लौटना तथा अपने शिशु को उड़नें लायक बनाने की जुगत-सब सहकार एवं सह- अस्तित्व के लक्ष्य हैं। यही सब मृगादि जीव-जन्तुओं पर भी लागू होता है। अभिप्रेत मात्र इतना है कि सहजीवन का ककहरा वहाँ भी है। सृष्टि का मूल भी यहीं है। नर और मादा दो बड़े घटक हैं जिन्हें विधाता ने सिरजा है, जिनको हम जीव विज्ञान की भाषा में कहें तो 'एक्स' और 'वाई' फैक्टर। किन्तु ये दोनों पृथक् स्वतंत्र इकाइयों में शून्य हैं यदि इनका सह-अस्तित्व या साझीदारी ना हो। सृजन, सिंचन और लय जगत् का क्रम है। इन तीनों के मूल में जो शक्तियाँ हैं उनके सन्दर्भ में भारतीय पौराणिक मान्यता है कि ये ब्रह्मा, विष्णु, महेश की साझीदारी से चलती है। ब्रह्मा के पास यदि सृजन है तो विष्णु के पास पोषण है। शिव सर्वविध कल्याण के प्रतीक हैं जो भी सृष्टि में अनुपयुक्त है, बासी सड़ा-गला है वह शिव में लय हो जाता है। ये

♦ प्राचार्य, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर

जोखिम भरा निर्णय था। इस निर्णय का जोखिम प्रभा जी की जिन्दगी में ता उम्र बनी रही।

पुरूष जब स्त्रियों के साथ सम्बन्ध बनाता है तो वह उसको पौरूष कहता है। 'वीरभोग्या वसुन्धरा' की ग्रंथि उसको औचित्यपूर्ण ठहराने की कुचेष्टा है। वह विजेता के भाव मे होता है। जब बात स्त्री की हो तो छुपाती है, उसका 'नाम' ढूंढती है। सही परिभाषा चाहती है। अनथक चेष्टा करती है। नैतिकता का सवाल निरन्तर उसका पीछा करते हैं। इस सम्बन्ध की वकालत नहीं है किन्तु किसी के प्रति प्रेम होना गंदा नहीं। कमजोर नहीं करता। यदि उसका साथी ईमानदारी के साथ उसके साथ खड़ा हो। यह जीवन विश्वास पर बनता है। नैतिकता के ढकोसले यहां नहीं होते। प्रभा जी पारम्परिक सम्बन्ध से इतर प्रेम सम्बन्ध में रही जिसे आज 'सहजीवन' कहा जा रहा है। वहां डाक्टर की महत्वाकांक्षाओं के मकड़जाल में फंसकर जिन्दगी को अन्तहीन दर्द दिया। मन मे एक गिला बना रहा। जो फजीहतें थी वे सचमुच अधिक थी। यह 'रिश्ता' दर्द का रिश्ता नहीं बनता जब उनका पार्टनर उनके साथ ईमानदार सम्बन्धों मे खड़ा होता। तब सह-जीवन मे सह-अस्तित्व की समतल भूमि तैयार होती। अवमानना अवहेलना, अवमूल्यन अनसुने रह जाने का भय स्त्री के हिस्से मे ही आता है चाहे पत्नी हो, प्रेयसी हो या पार्टनर।

स्त्री को साथ चाहिए। एक ऐसा साथ जहां प्रेम से भींगी हुयी संवेदनाएं हों, समानुभूति हो, सहानुभूति हो, उसको इंसान समझने की समझ हो। जो सपने स्त्री के इस साथ के साथ पाल रखे थे उसे साकार परिणति मिले। साथ-साथ चलने की सच्ची शपथ हो, ऐसी डगर हो जो स्त्री के लिए भी उतनी ही समतल हो जितना पुरूष के लिए है। साझीदारी से बनी हो और फिर स्त्री बशीर बद्र के हवाले से ही सही ये कह तो सके .....

"जो मैं बन संवर के चलूँ कहीं,
मेरे साथ तुम भी चला करो।।"